भारतीय शासन
और
राजनीति

जे० सी० जौहरी

एम. ए., एल. एल. बी., पी. एच. डी.
वरिष्ठ प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग
श्यामलाल कालेज, (दिल्ली यूनिवर्सिटी)
दिल्ली—110032

पहला भाग

5951

दूसरा संस्करण
1976
पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित

विशाल पब्लिकेशन्ज़

6-U.B. बंगलो रोड — अड्डा होशियारपुर,
दिल्ली-110007 जालन्धर-144008

विषय सूची

क्रम सं०	अध्याय	पृष्ठ संख्या

भाग 1 : ऐतिहासिक विन्यास

1. **ब्रिटिश साम्राज्यवाद** 3

साम्राज्यवाद का अर्थ व स्वरूप : बुर्जुआ (पूंजीवादी) बनाम मार्क्सवादी व्याख्याएं

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विकास के चरण : 'प्रथम, 'द्वितीय' व 'तृतीय' ब्रिटिश साम्राज्य

प्रारम्भिक चरण : 'प्रथम ब्रिटिश साम्राज्य' : व्यापार-पूंजी का साम्राज्यवाद

संक्रान्तिकाल : 'दूसरा ब्रिटिश साम्राज्य' : मुक्त-व्यापार-पूंजी सम्बन्धी साम्राज्यवाद

अन्तिम चरण : 'तीसरा ब्रिटिश साम्राज्य' : वित्त-पूंजी का साम्राज्यवाद

समालोचनात्मक परीक्षण : ब्रिटिश साम्राज्यवाद का प्रतिक्रियावादी एवं पुनुर्त्थानवादी स्वभाव

2. **संवैधानिक प्रयोग** 29

ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति : 'फूट डालो, राज करो से लेकर 'फोड़ चलो और छोड़ चलो तक'

पहला काल (1756—1858) : विजय, संयोजन व एकीकरण का युग

दूसरा काल (1858—1905) : दिखावटी सहयोग की नीति का युग

तीसरा काल (1909—40) : देशी लोगों का देशी लोगों के खिलाफ़ अनुरंजन व समतोलन का युग

चौथा काल (1940—47) : 'फूट डालो और राज करो' नीति को 'फोड़ चलो और छोड़ चलो' नीति में परिवर्तन का युग

ब्रिटिश उपनिवेशवादी अधिनियम : 'युक्तिसंगत सुधारों' द्वारा संवैधानिक सुधार

1857 से पूर्व की अवधि में 'युक्तिसंगत सुधार' : कम्पनी के कार्यकलापों पर नियन्त्रण रखने की खोज में

1773 का रेग्युलेटिंग ऐक्ट, 1784 का पिट का भारत अधिनियम

1793, 1813, 1833 व 1853 के चार्टर अधिनियम
उत्तर—1857 के काल में 'युक्तिसंगत सुधार' : साम्राज्य
के हितों को सुरक्षित करने की खोज में
1858 का अधिनियम, 1861 का अधिनियम, 1892 का अधिनियम
1909 का अधिनियम, 1919 का अधिनियम, 1935 का अधिनियम
1947 का भारत स्वतन्त्रता अधिनियम 59

3. **भारतीय राष्ट्रवाद**

राष्ट्रवाद : अभिप्राय व स्वभाव : औपनिवेशिक व उपनिवेश-विरोधी
राष्ट्रवाद के विविध रूप
भारत में राष्ट्रवाद : राष्ट्रीय जागरण के कारण
1. सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण 2. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
3. आर्थिक असन्तोष 4. वायसराय लिटन की दमनकारी नीति 5. जातीय
भेदभाव 6. विदेशी घटनाएं
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : 'ब्रिटिश साम्राज्ञी विद्वता
का सौतेला शिशु'
भारतीय राष्ट्रवाद : विकास के चरण : 'युक्तिसंगत संवैधानिक
सुधारों' के लिए आन्दोलन से लेकर 'पूर्ण स्वराज्य
के लिए संघर्ष तक
पहला चरण (1885—1905) : उदारवाद का उत्थान :
पाश्चात्य शिक्षा-प्राप्त विद्वानों का आन्दोलन
दूसरा चरण (1905—20) : गरमवाद का उत्थान :
मध्य-वर्गीय आन्दोलन का युग
तीसरा चरण (1920-47) : गांधी जी का काल :
जन आन्दोलन का युग
आलोचनात्मक परीक्षण : साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का स्वभाव
तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का चरित्र 83

4. **उपनिवेश-विरोधी आन्दोलन**

स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन : अस्पष्ट स्वराज्य के लिए
पहला उपनिवेश-विरोधी संघर्ष
गृह-राज आन्दोलन : नरमवाद व राजनीतिक प्रतिक्रिया का
सुधरा हुआ रूप
अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन : गांधी जी का राजनीतिक यथार्थ के
साथ पहला व अपरिपक्व अनुभव
उदारवादी राजनीति का पुनरुत्थान : स्वराज्यवादियों का 'भीतर

आओ, बाहर जाओ' आन्दोलन
सविनय अवज्ञा आन्दोलन : राजनीतिक यथार्थ के साथ
गांधी जी का दूसरा व परिपक्व अनुभव
'भारत छोड़ो आन्दोलन' : राजनीतिक यथार्थ के साथ
गांधी जी का अन्तिम व पूर्णतया परिपक्व अनुभव 111

5. **राजनीतिक प्रवृत्तियां**

नरमवाद : अवयवी एवं वफादार राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति
गरमवाद : रूढ़िवादी और क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति
आतंकवाद : क्रान्ति और आक्रामक राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति
मुस्लिम सम्प्रदायवाद : फ़िरकापरस्ती और राष्ट्र-विरोध की प्रवृत्ति
गांधीवाद : अहिंसात्मक व धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति

भाग 2 : आमूल संरचना 143

6. **संविधान-निर्माण**

संविधान सभा की रचना : मुख्यत: एक कांग्रेस सभा के रूप में
संविधान सभा का कार्य संचालन : समिति व्यवस्था तथा
विधायन प्रक्रिया
विकल्पों की खोज : आधारभूत स्वीकृत पक्षों पर सहमति :
संविधान के आधारभूत सामाजिक दर्शन का निर्धारण
संविधान : एक कांग्रेस दस्तावेज़ के रूप में
आलोचनात्मक विवरण : सहमति द्वारा क्रान्ति की सफलता 16

7. **संविधान की प्रस्तावना**

उद्देश्य प्रस्ताव : संविधान की आत्मा का आधार
प्रस्तावना : संविधान की आत्मा के रूप में
प्रस्तावना के अनिवार्य तत्त्व : एक लोकसत्तात्मक गणराज्य के
गौरवपूर्ण मूल्य
(1) हम भारत के लोग (2) सर्वप्रभुत्व सम्पन्न (3) लोक सत्तात्मक
(4) गणराज्य (5) न्याय (6) स्वतन्त्रता (7) समानता (8) बन्धुता
समालोचनात्मक विवरण : संविधान का मूल्य नापने के लिए
उचित मापदण्ड

8. **दूसरी क्रान्ति की ओर**

संविधान का सामाजिक व आर्थिक आधार व दर्शन
संविधान का सामाजिक आधार व दर्शन
संविधान का आर्थिक आधार व दर्शन

संविधान : सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के यन्त्र के रूप में
संविधान : प्रतिक्रियावाद व विपरीतगमन के यन्त्र के रूप में
संविधान : सामाजिक आर्थिक प्रगति के यन्त्र के रूप में 198

9. भारतीय संघ
एक व्यवस्था का अन्त : देशी रियासतों का एकीकरण
राज्यों का पुनर्गठन : भाषा के आधार पर राजनीतिक एकीकरण
क्षेत्रीय परिषदें : संविधान में एक अद्‌भुत प्रयोग
भाग I : भारतीय संघ तथा उसका भू-भाग
समालोचनात्मक परीक्षण : राष्ट्रीय हित की सार्वभौमिकता 217

10. मौलिक अधिकार
मूल अधिकार : अर्थ व स्वरूप
मूल अधिकार : विशेषक प्रतिबन्धों के साथ इनका वर्गीकरण
(1) समानता का अधिकार (2) स्वतन्त्रता का अधिकार (3) शोषण के विरुद्ध अधिकार (4) धार्मिक अधिकार (5) सांस्कृतिक और शिक्षात्मक अधिकार
(6) सम्पत्ति का अधिकार (7) संवैधानिक उपचारों का अधिकार
निवारक नजरबन्दी : भारत का आन्तरिक सुरक्षा अनुरक्षण अधिनियम
आलोचनात्मक मूल्यांकन : तीसरा भाग - संसदीय सर्वोच्चता के नियम के अधीन राजनीतिक लोकतन्त्र का महान् चार्टर 235

11. निर्देशक सिद्धान्त
निर्देशक सिद्धान्त : राज्य के सकारात्मक दायित्वों का व्यापक विवेचन
मौलिक अधिकार व निर्देशिक सिद्धान्त : मधुर सामंजस्य का सिद्धान्त
सर्वोच्च न्यायालय व निर्देशक सिद्धान्त : न्याय-मान्य बनाम न्याय-अमान्य धाराओं की समस्या
निर्देशक सिद्धान्तों का क्रियान्वयन : लोक कल्याण की दिशा में प्रगति
समालोचनात्मक परीक्षण : सामाजिक व आर्थिक लोकतन्त्र का घोषणापत्र 271

12. न्यायिक समीक्षा
न्यायिक समीक्षा : अभिप्राय और सिद्धान्त
नियन्त्रण और सन्तुलन का सिद्धान्त : न्यायिक समीक्षा—क्या यह संविधान के ढांचे का आवश्यक तत्त्व है ?
परिसीमाएं : संसदीय सर्वोच्चता के अधीन न्यायिक प्राधिकार
आलोचनात्मक मूल्यांकन : न्यायपालिका - सामाजिक क्रान्ति के एक उपांग के रूप मे 286

13. संघीय व्यवस्था
भारतीय संघवाद : गतिशील निहितार्थ और विचित्र लक्षण
संघ-निर्माण की विधि : औपचारिक संघीय ढांचे के लक्षण
केन्द्र की सर्वोच्च शक्ति : केन्द्रीकरण और एकरूपता के लक्षण
केन्द्र की मजबूत स्थिति : संघवाद का व्यावहारिक रूप
आलोचनात्मक मूल्यांकन : भारत में एकात्मक संघवाद का प्रतिमान

14. केन्द्र-राज्यों के सम्बन्ध 312
विधायनी सम्बन्ध : संसद की विशेषित सार्वभौमता

प्रशासनिक सम्बन्ध : केन्द्र द्वारा राज्यों को विशाल निर्देश, अधीक्षण और नियन्त्रण
वित्तीय सम्बन्ध : निर्वाहदान प्राप्त करने वाले निगमों के रूप में राज्य सरकारें

भाग 3 : प्रशासनिक संगठन 337

15. राष्ट्रपति
योग्यताएं और निर्वाचन
राष्ट्रपति का चुनाव : व्यक्ति-योग्यता की राजनीतिक योग्यताएं :
'प्रधान मन्त्री के राष्ट्रपति' का सिद्धान्त
अवधि, उत्तराधिकार और महाभियोग, सामान्य कार्य और शक्तियां
कार्यपालक शक्तियां, विधायनी शक्तियां, वित्तीय शक्तियां, न्यायिक शक्तियां
असामान्य कार्य और शक्तियां
राष्ट्रीय आपातकालीन स्थिति, राज्य-स्तर पर आपातकालीन स्थिति
वित्तीय आपातकालीन स्थिति, आलोचनात्मक मूल्यांकन
राष्ट्रपति की अन्तरिम शक्तियां और कार्य, राष्ट्रपति और राज्य
स्वतन्त्र राष्ट्रपति का सिद्धान्त, सक्रिय और आलोचक राष्ट्रपति
वास्तविक स्थिति : नाम मात्र का बनाम वास्तविक कार्यपालक
भारतीय राष्ट्रपति : न तो रबड़ की मोहर और न शान्त ज्वालामुखी 403

16. प्रधान मन्त्री
भारत में प्रधान मन्त्रीय सरकार : औपचारिक संवैधानिक ढांचा
प्रधान मन्त्री : चयन और नियुक्ति, प्रधान मन्त्री और मन्त्रि-परिषद्
प्रधान मन्त्री और राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री और दल के प्रधान
प्रधान मन्त्री के पद का राष्ट्रपतीयकरण
प्रधान मन्त्री के पद को चुनौती : 'अंधेरे दिनों' से 'उजाले दिनों' तक की हाल की राजनीतिक घटनाएं
तीन प्रधान मन्त्री : एक तुलनात्मक अध्ययन 457

17. संसद्
राज्य सभा : वरिष्ठों का उच्च सदन
संगठन, कार्यकाल, शक्तियां और कार्य, समालोचनात्मक विवरण
लोकसभा : लोकप्रिय व शक्तिशाली सदन
संगठन, कार्यकाल, शक्तियां और कार्य
स्पीकर : लोक सभा का अध्यक्ष
चुनाव और कार्यकाल, शक्तियां और कार्य, स्थिति
हस्तांतरित विधायन
अभिप्राय, स्वभाव तथा सीमाएं, न्यायिक व्याख्याएं व परिसीमाएं
संसदीय नियन्त्रण, आलोचनात्मक मूल्यांकन
संसद : 'बेड़ियों में ग्रस्त राक्षस के रूप में'

18. एकीकृत न्यायपालिका 494
सर्वोच्च न्यायालय

संगठन, कार्यकाल व निष्कासन, अधिकारक्षेत्र,
उच्च न्यायालय
संगठन, कार्यकाल व निष्कासन, अधिकार क्षेत्र
समालोचनात्मक परीक्षण : प्रतिबद्ध न्यायपालिका का भय

19. **राज्यपाल** 517
राज्यपाल की नियुक्ति : राजनीतिक कृपा का निस्सन्देह उपयोग, औपचारिक शक्तियां व कार्य
व्यावहारिक रूप में राज्यपाल की शक्तियां व कार्य : भूमिका की समस्या
राज्यपाल व मन्त्रि परिषद्, राज्यपाल व विधान मंडल ।

20. **मुख्य मन्त्री** 538
नियुक्ति
शक्तियां व वास्तविक स्थिति
(1) एक बहुमत वाले दल (कांग्रेस) का मुख्य मन्त्री
(2) एक बहुमत वाले दल (गैर-कांग्रेस) का मुख्य मन्त्री
(3) एक मिश्रित सरकार का मुख्य मन्त्री

21. **विधानमंडल** 547
विधान परिषद् : ऊपरी व शक्तिहीन सदन
संगठन, योग्यताएं व कार्यकाल, महत्त्वहीन शक्तियां और स्थिति
विधान सभा : निचला व शक्तिशाली सदन
संगठन, योग्यताएं व कार्यकाल, शक्तियां व कार्य
स्पीकर
पश्चिमी बंगाल का मामला, पंजाब का मामला, मद्रास का मामला
आलोचनात्मक परीक्षण : अधीन संसदों के रूप में राज्यों के विधान मंडल

22. **नौकरशाही** 564
सेवाओं के तीन वर्ग, लोक सेवा आयोग
भारतीय नौकरशाही : 'अपने किस्म का एक हित समूह'
सेवाओं की स्वतन्त्रता : प्रतिबद्धता की समस्या
अप्रतिबद्ध सेवाएं : एक समालोचनात्मक विवरण

23. **दल व्यवस्था** 579
भारतीय दल व्यवस्था : सामान्य लक्षण
भारतीय दल व्यवस्था : एक वर्गीकृत स्पष्टीकरण
भारत में राजनीतिक दल व गुट
भारत के प्रमुख राजनीतिक दल
(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, (2) भारतीय जन संघ (3) भारतीय लोक दल
(4) समाजवादी दल, (5) साम्यवादी दल (6) मार्क्सवादी –साम्यवादी दल
समालोचनात्मक परीक्षण : भारत में स्वस्थ दल व्यवस्था का अभाव
परिशिष्ट I : प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का 20-सूत्रीय कार्यक्रम
परिशिष्ट II : सरदार स्वर्ण सिंह कमेटी के प्रमुख सुझाव
परिशिष्ट III : प्रस्तावित 44वें संविधान संशोधन बिल की विशेषताएं